

**श्री गोल्ज्यू देवता मंदिर थकलाट, बागेश्वर की स्थापना का संक्षिप्त परिचय**

यों तो श्री गोल्ज्यू देवता थकलाट धाम में अपने मामा श्री हरज्यू देवता के साथी के रुप में लगभग 180 वर्षों से जब से श्री हरज्यू देवता का मन्दिर बना है विद्यमान हैं। प्रसंग वर्ष 2013 में श्री हरज्यू मन्दिर में लगी बैसी का है जब श्री हरज्यू देवता के दरवार में बैसी का आयोजन हुआ था और दरबार में श्री गोल्ज्यू के डंगरिया में अवतार हुआ था इसी दौरान एक भक्त श्री गिरीश कांडपाल के मन में भगवान ने भाव दिया कि श्री गोल्ज्यू देवता का एक नया मंदिर बनाया जाय तब इसे बनाने की स्वीकृति चाही गई क्योकिं तब ऐसा लग रहा था कि श्री हर्ज्यू मन्दिर में श्री गोल्ज्यू के अवतारी के लिये जगह कम पड़ते जा रही है तब श्री गोल्ज्यू देवता ने अपार जन समूह की उपस्थिति में नया मन्दिर बनाने के लिये सहर्ष स्वीकृति प्रदान की । मन्दिर किस स्थान पर बने उसके बारे में पुन: पूछे जाने पर अगले दिन की बैसी में देवता ने इशारे से आदेश दिया कि श्री हरज्यू मन्दिर के सामने दिखने वाले पूरे टीले की जगह में जहाँ भी मन्दिर बनाया जाये वह जगह उपयुक्त होगी । इसी स्वीकृति के साथ श्री गोल्ज्यू के डंगरिया श्री जगदीश काण्डपाल जी ने मन्दिर स्थल का चयन किया और मुहुर्तानुसार दिनांक 23 मई 2014 को मन्दिर की नींव का पत्थर श्रीमती मोहिनी देवी कान्डपाल के हाथों से रखा गया। मंदिर निर्माण की खुदाई के कार्य का श्रीगणेश भी हो गया। स्थान की महत्ता, श्रद्धभाव व धार्मिक आधार को और अधिक बल इसलिये मिल जाता है कि निर्माण की खुदाई पर गांव के गणमान्य लोगों ने सुबह-सुबह एक पीले रंग का नाग देखा जिसे देखने की पुष्टि उन्होने हाल में स्वयं ही की है, साथ ही मंदिर के काम को अंजाम देने वाले श्री योगेश जी को वहां पर पौराणिक अवशेष भी मिले,जिसे बाद में उन्होंने श्री गिरीश काण्डपाल जी को भी दिखाया। साथ में गांव के संभ्रांत लोगोंने यह भी बताया कि वहाँ पर सिक्के भी बहुतायत में मिले। जिससे उनकी खास महत्ता को बल देते हुये पुख्ता सबूतों के आधार पर भक्त इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वहाँ श्री गोल्ज्यू निवास करते हैं! और अधिक जानकारी के लिये यह पर्याप्त है कि अब तक वहां निर्माण कार्य पर लगभग रू. 22 लाख खर्च हो चुके हैं और निर्माण कार्य पुर होने तक कम से कम 8 लाख रुपये तक और लगने का अनुमान है। यह सब किसी एक के बस की बात नहीं है, यह मात्र दान और दान ही है! जिस गांव में कितने लोग देने की नहीं लेने की सोचते हों, उस गांव में इतने रूपयौं का इक्ट्ठा हो जाना भी श्री गोल्ज्यू देवता के होने का सक्ष्यात प्रमाण है| मंदिर का काम चलता रहा। इसमें कदाचित पहले पहल गाँव के अलावा काफी कम लोगों को यह पता नहीं था कि इस जगह पर श्री गोल्ज्यू का मंदिर बन रहा है। प्रवासियों के मन में यही चल रहा होगा। निर्माण का कछुवा चाल भी इसका एक कारण हो सकता है? जब लगभग 8 लाख के लगभग ब्यक्तिगत रूपये लग गये तब प्रभू ने अपनी कृपा बरसानी प्रारंभ करते हुये श्री गोल्ज्यू दगड़ करिया ग्रूप के निर्माण का भाव दिया । ग्रूप का निर्माण करना एक नये युग का प्रवेशद्वार खोलना जैसा हुआ। धीरे धीरे प्रदेश के कई प्रांतों से,देश व विदेश से अपने जान पहचान के सम्बन्धी,बहनें,बेटियां, मित्रगण व अपने लोग ग्रुप से जुड़ते गये और श्री गोल्ज्यू का परिवार बढ़ता गया हर किसी ने गोल्ज्यू दगड करिया ग्रूप को आगे बढाने का काम किया ताकि भविष्य में श्री गोल्ज्यू देवता के अन्य मंदिरों की तरह ही इसकी प्रतिष्ठा भी बढती रहे। यह बताना भी आवश्यक है कि कुमाऊँ श्री गोल्ज्यू मन्दिर के जहाँ भी स्वतंत्र व प्रतिष्ठित मन्दिर बने हैं वहां पर भी विधि विधान पूर्वक ज्योति श्री गोल्ज्यू के मूल मन्दिर चम्पावत से लाकर ही स्थापित की गई है/और की जाती रहेगी। जब ग्रूप की गतिविधियां बढ़ने लगी तभी मंदिर के बनने की चाल पर नजर भी रखने लगे, मंदिर बनाने वाले पर दबाव बढ़ता जा रहा था, इधर ग्रूप तय कर चुका था कि अश्विन मास संवत 2075 तद्नुसार 16.10.2018 की नवरात्रियों में चम्पावत से चम्पावत के राजा जो कुमाऊँ में प्रचलित न्याय ब्यवस्था के संदर्भ में बिशेषज्ञता रखते हैं व दोषियों को उचित दण्ड देने में सक्षम हैं तथा भक्तो का भला करते है और सकारात्मकता भी देते है को थकलाट लाया जाय ।आभास होता है, श्री हरज्यू महाराज जी के भानिज श्री गोल्ज्यू महाराज जी को जो नवरात्र में चम्पावत में रहते हैं, वहाँ से लाने का काम सप्तमी को हुआ। तब से अब तक जिस हतासा व निराशा से गांव जकड़ चुका था उसकी गाठें खुलने लगी हैं वे उस जकड़न को दूर कर रहे हैं। गाँव में काफी जागरुकता आयी है, कुछ लोग अभी भी मुख्य धारा में नहीं आये हैं धीरे धीरे वे भी आ जायेंगे परंतु उनके दुष्प्रचार करने की सीमा में काफी न्यूनता आ चुकी है। अब आज थकलाट क्षेत्र ऐसा क्षेत्र बन गया है जहां पर श्री हरज्यू मन्दिर,श्री गोल्ज्यू मन्दिर व श्री भुमिया मन्दिर स्थित हैं ।यह एक अजब संयोग है कि थकलाट में श्री गोल्ज्यू देवता अपने दो स्वरूपों में विराजमान हैं इनका प्रथम स्वरुप तो श्री हरज्यू देवता के भनिज/ साथी के रुप में श्री हरज्यू देवता के मन्दिर में विराजमान होना है और दूसरा स्वतंत्र स्वरुप श्री गोल्ज्यू देवता मन्दिर में विराजमान होना है अत: सच्चे भक्त को यहाँ दूना आशीर्वाद मिलना निश्चित है । जो एक शुभ संकेत हैं और भविष्य उज्ज्वल की कृपा है।

🚩जय हो बाला गोरिया🚩